मनी आर्डरों का वितरण

+

५७४ { श्री भक्त दर्शन :
श्री स० चं० सामन्त :

क्या परिवहन तथा संचार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार को १९५६-५७ में ग्रामीण डाक-घरों से मनी आर्डरों के वितरण में असाधारण विलम्ब के सम्बन्ध में कोई शिकायतें प्राप्त हुई हैं; और

(ख) इस स्थिति में सुधार करने के लिये क्या कार्यवाही की जा रही है ?

परिवहन तथा संचार मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री राज बहादुर) : (क) जी हां ।

(ख) स्थिति को सुधारने के लिये की गयी कार्यवाही को दर्शाने वाला एक विवरण पत्र (statement) सभा-पटल पर रखा गया है [देखिये परिशिष्ट ३, अनुबन्ध संख्या ६७]

श्री भक्त दर्शन : जो विवरण-पत्र सभा-पटल पर रखा गया है, उस में दिये गये उपायों के लिये धन्यवाद देते हुये मैं जानना चाहता हूं कि क्या गवर्नमेंट के ध्यान में यह बात आई है कि इन आदेशों के बावजूद भी अभी तक गांवों में काफ़ी अड़चन पड़ रही है और खास तौर से मुझे सूचना मिली है कि लाखों रुपये के मनी-आर्डर मेरे जिले गढ़वाल में कई महीनों से वितरित नहीं हुये हैं । क्या इस सम्बन्ध में कोई कड़ी कार्यवाही की जायगी ?

श्री राज बहादुर : मैं आशा करता हूं कि माननीय सदस्य को ज्ञात है कि जो कारण बताये गये हैं, उन में से अधिकांश ऐसे हैं, जो कि डाक विभाग के अधीन नहीं हैं । यह तो उन मार्गों की सुरक्षा के ऊपर निर्भर है, जिन पर की पया ले जाया जा सकता है । चूंकि डाकखाने काफ़ी बढ़ चुके हैं और ट्रैफिक भी काफ़ी बढ़ चुका है, इसलिये सम्भव है कि कहीं पर अधिक मनी-आर्डर जमा हो गये हों ।

श्री भक्त दर्शन : क्या मैं माननीय मंत्री को यह निवेदन कर सकता हूं कि इस सम्बन्ध में आज से ठीक तीन वर्ष पहले अर्थात् २८-२-५५ को मैंने यह प्रश्न सदन के सामने रखा था और क्या अब हैड्ज आफ़ सर्कल्ज और पोस्ट मास्टर्ज जनरल को खास तौर से हिदायतें दी जायेंगी कि इस बारे में तुरन्त कार्यवाही की जाय, ताकि जनता को कठिनाई न हो ?

श्री राज बहादुर : मैं इस आवश्यकता का अनुभव करता हूं, किन्तु मैं बताना चाहता हूं कि जहां तक हैड्ज आफ़ सर्कल्ज का सम्बन्ध है, इस बारे में वे पुलिस पर निर्भर हैं, क्योंकि जब तक वह न कह दें कि किस मार्ग पर कितना रुपया ले जाया जा सकता है और कोई मार्ग सुरक्षित है या नहीं, गांव में रात को डाकिया ठहर सकता है या नहीं, तब तक यह सम्भव नहीं हो सकता है ।

श्री स० चं० सामन्त : क्या मैं जान सकता हूं कि किन पोस्टल सर्कलों में एक हजार रुपये से अधिक भेजने का प्रबन्ध किया गया है ?

श्री राज बहादुर : मैं निश्चित रूप से उन जगहों का नाम नहीं बता सकता हूं, किन्तु विशेष अवस्था में हैड्ज आफ़ सर्कल्ज को यह अधिकार है कि वे ऐसी व्यवस्था कर दें ।

Shri Jaipal Singh: Has it come to the notice of Government, through the Press, that there has been a series of complaints that money orders sent to the Andamans and coming from the other side are being received, not by the payees, but by others?

Shri Raj Bahadur: I am not aware of any such cases, but I would be grateful if such things are pointed out to us.

Shri Tyagi: Are Government considering any proposal by way of distributing cheques in place of cash in such cases where there is risk of robbery etc. on the way?

Shri Raj Bahadur: The success of the cheque system depends upon the existence of branches of the banks....

Shri Tyagi: Postal Savings Banks also.

Shri Raj Bahadur: Postal Savings Banks and banks also.

Delegation to China

+

*575. Shri D. C. Sharma:
Shri Bhakt Darshan:
Shri S. C. Samanta:
Sardar Iqbal Singh:

Will the Minister of **Food and Agriculture** be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 586 on the 28th November, 1957 and **state**:

(a) whether the report submitted by the delegation headed by Shri R. K. Patil which visited China has since been examined; and

(b) if so, the decision taken by Government on the report?

The Minister of Cooperation (Dr. P. S. Deshmukh): (a) The examination is not yet complete, but certain tentative decisions have already been taken.

(b) The question does not arise

Shri D. C. Sharma: May I know what tentative decisions have been arrived at?

Mr. Speaker: The hon. Minister said in his reply that some tentative decisions have been taken. Part (b) of the question is: "if so, the decision taken by Government on the report?"

The Prime Minister and Minister of External Affairs and Finance (Shri Jawaharlal Nehru): If a Mission is sent abroad, we are not called upon to make decisions on the report of the Mission; we profit by the report. It may affect our policy as many other factors do. The idea is not as if a report is presented to the House and a decision taken thereon. When a Mission goes abroad and reports to us on the conditions in Russia, America or China, that is information for us. We profit, we learn from it. But there is no decision in regard to the report directly except in so far as it may affect our general knowledge and policy.

Shri Jaipal Singh: We want to know what the profits are.

Shri Bimal Ghose: Sir, I rise one a point of order. The answer to part (a) of the question shows that certain decisions were taken on the report, may be tentative. If the Government had not said that any decisions were taken on the report, that is a different matter. There must have been certain recommendations on which certain decisions were taken.

Shri Jawaharlal Nehru: That is so, and I have no doubt that my colleague will give you those decisions. But, what I am saying is that they are not decisions on the report. They are in so far as they affect our policy. They are not precise recommendations that they should be done in India, but conclusions end other things. I merely wanted to clarify that answer. I have no doubt, if the House so desires, a fuller answer can be given at a later moment.

Mr. Speaker: Evidently, the hon Member who raised this point wants to know how far we have profited by the recommendations made in the report; whether there was any particular point which we had not noticed earlier, but which has taken into consideration now and implemented; otherwise, generally, the report stands.